शमशेरः प्रकृति, प्रेम और सौन्दर्य की कवितायें

डॉ0 सरिता

शमशेर को ''विशुद्ध सौन्दर्य का कवि'' कहा जाता है। वे नयी कविता के कवियों में सबसे कठिन कवि हैं। पाठकों और आलोचकों के लिये वे दुरूह कवि हैं। विजयदेव नारायण साही ने शमशेर के बारे में लिखा है–''हिन्दी में शमशेर से ज्यादा दुरूह कवितायें किसी और ने नहीं लिखा है।'' उनके कविता की यही दुरूहता उनकों ''कवियों का कवि'' बनाती है। शमशेर की कविता को समझने के लिये सम्पूर्ण हिन्दी कविता को समझना अनिवार्य है। हिन्दी ही नहीं बल्कि उसके साथ–साथ उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी एवं फ्रेंच कविता साहित्य को भी समझना जरूरी है। वे प्रयोगवादी कवि हैं। मार्क्सवाद में उनकी अहर्निश श्रद्धा हैं। साम्यवाद को पोषित करतीं उनकी ढेरों कवितायें हैं परन्तु प्रकृति प्रेम व सौन्दर्य की उनकी कवितायें आकाशीय ऊचाईयाँ छूती नजर आती हैं। साही जी लिखते हैं– तात्विक रूप में षमशेर की काव्युनभूति सौन्दर्य की ही अनुभूति है। आज तक हिन्दी में विशुद्ध सौन्दर्य का कवि यदि कोई हुआ है तो वह शमशेर है। साही जी का कथन शमशेर की सौन्दर्यप्रियता, प्रकृतिप्रियता की सच्चाई का अनुशीलन है।